



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II—Section 3—Sub-Section (ii)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 140]
No. 140]

नई दिल्ली, शुक्रवार, अप्रैल 11, 1980/चैत्र 22, 1902
NEW DELHI, FRIDAY, APRIL 11, 1980/CHAITRA 22, 1902

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

विधि, व्याप और कंपनी कार्य मंचालय

(कंपनी कार्य विभाग)

आदेश

नई दिल्ली, 11 अप्रैल, 1980

कंपनी विधि बोर्ड

का० प्रा० 247(घ).—फिल्म वित्त निगम लिमिटेड, कंपनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) के अधीन नियमित कंपनी है और इसका रजिस्ट्रीकृत कार्यालय 13-16, रीजेंट केम्पज, 208, नारमन प्वाइंट मुम्बई 400021 में है तथा वह फिल्मों के उत्पादन के वित्तपोषण और विदेशी फीचर फिल्मों और कच्ची-सिनेमा फिल्मों के आयात और वितरण का कारबार करती है ;

और भारतीय चलचित्र निर्यात निगम लिमिटेड भी कंपनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) के अधीन नियमित कंपनी है और इसका रजिस्ट्रीकृत कार्यालय 'डी' ब्लॉक, शिवसागर एस्टेट, हा० सेन बसन्त रोड, बारसी, मुम्बई 400018 में है और फिल्मों के निर्यात का कारबार करती है ;

और राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लिमिटेड भी कंपनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) के अधीन नियमित कंपनी है और इसका रजिस्ट्रीकृत कार्यालय महाराष्ट्र राज्य में है और वास्तविक रूप से कोई कारबार नहीं करती है ;

और ऊपर निर्दिष्ट तीनों कंपनियों के सभी शेयर केन्द्रीय सरकार द्वारा भारत के राष्ट्रपति के नाम में धारित है ;

और कंपनी विधि बोर्ड का यह समाधान हो गया है कि लोकहित में यह आवश्यक है कि फिल्म वित्त निगम लिमिटेड और भारतीय चलचित्र निर्यात निगम लिमिटेड का राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लिमिटेड के साथ समामेलन कर दिया जाए ताकि सभी कंपनी कंपनियों के क्रियाकलाप एकल कंपनी द्वारा अधिक दक्षता और मितव्यता से किए जा सकें ;

और प्रस्थापित आदेश के प्राप्ति की एक प्रति उपर्युक्त तीनों कंपनियों अर्थात्, फिल्म वित्त निगम लिमिटेड, भारतीय चलचित्र निर्यात निगम लिमिटेड और राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लिमिटेड को भेज दी गई है और उनसे प्राप्त सुझावों पर कंपनी विधि बोर्ड द्वारा विचार कर लिया गया है तथा उनमें किसी से भी कोई आक्षेप प्राप्त नहीं हुआ है ;

अतः कंपनी विधि बोर्ड केन्द्रीय सरकार के कंपनी कार्य विभाग की अधिसूचना सं० का० नि० 443(ई०) तारीख 18 अक्टूबर, 1972 के साथ पठित कंपनी अधिनियम की धारा 396 की उपधारा (1) और उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित आदेश करता है, अर्थात् :—

1. संक्षिप्त नाम—इस आदेश का संक्षिप्त नाम फिल्म वित्त निगम लिमिटेड, भारतीय चलचित्र निगम लिमिटेड और राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम लिमिटेड समामेलन आदेश, 1979 है ।

2. परिभाषाएं—इस आदेश में जब तक कि संदर्भ से अन्यथा पेश-क्षित न हो,—

- (क) "नियत दिन" से वह तारीख अभिप्रेत है जिसको यह आदेश राजपत्र में अधिसूचित किया जाता है ;
- (ख) "फि० वि० नि० लि०" से फिल्म वित्त निगम लिमिटेड अभिप्रेत है ;
- (ग) "भा० च० वि० नि० लि०" से भारतीय चलचित्र नियति निगम लिमिटेड अभिप्रेत है ;
- (घ) "रा० फि० वि० नि० लि०" से राष्ट्रीय फिल्म विकास नियति निगम लिमिटेड अभिप्रेत है ।

3. कंपनियों का समामेलन—फि० वि० नि० लि०, भा० च० वि० नि० लि० के उपक्रम नियत दिन को रा० फि० वि० नि० लि० को अन्तरित और उसमें विहित हो जाएंगे, यह कंपनी ऐसा अन्तरण होते ही समामेलन के परिणामस्वरूप धनी समझी जाएगी ।

स्पष्टीकरण—उपरोक्त फि० वि० नि० लि० और भा० च० वि० नि० लि० के उपक्रमों के बारे में यह समझा जाएगा कि उनमें की ऐसी सभी आस्तियां, अधिकार, पट्टे, अभिवृत्तियां, शक्तियां, प्राधिकार और विशेषाधिकार पेटेंट के प्रयोग के लिए व्यापार चिह्न, व्यापार नाम, पेटेंट अधिकार और अनुश्रुतियां तथा सभी सम्पत्ति चाहे वह अंगम या स्थावर हो, मूर्त या अमूर्त (जिसमें लकड़ और बैंक प्रतिशेष भी सम्मिलित हैं), आरक्षित निधियां, बही ऋण, बकाया, आरक्षितियां, राजस्व खाते के प्रतिशेष, विनिधान और ऐसी सम्पत्ति और अधिकारों में या उनसे उद्भूत होने वाले अन्य सभी अधिकार और हित जो नियत दिन के ठीक पूर्व उनके अपने-अपने उपक्रमों के सम्बन्ध में फि० वि० नि० लि० और भा० च० वि० नि० लि० के स्वामित्व, कब्जे, शक्ति या नियंत्रण में थे और उनसे सम्बन्धित किसी भी प्रकार की बहियां, लेखे रजिस्टर, अभिलेख और अन्य सभी वस्तुओं, सम्मिलित हैं तथा उन उपक्रमों के बारे में यह समझा जाएगा कि उनके अपने-अपने उपक्रमों के सम्बन्ध में फि० वि० नि० लि० और भा० च० वि० नि० लि० के उस समय विद्यमान किसी भी प्रकार के सभी उधार, ऋण और अन्य दायित्व (जिनके अन्तर्गत उनके उपक्रमों के सम्बन्ध में नियोजित व्यक्तियों को किसी पेंशन या अन्य पेंशन फायदे के संवाप की ज़िम्मेदारी भी है) तथा बाध्यताएं सम्मिलित हैं ।

4. सम्पत्ति की कतिपय भागों का अन्तरण—इस आदेश के प्रयोजनों के लिए नियत दिन के ठीक पूर्ववर्ती दिन को फि० वि० नि० लि० और भा० च० वि० नि० लि० के सभी लाभ और हानियां तथा आरक्षितियां रा० फि० वि० नि० लि० को विन्मलिखित रूप में अन्तरित की जाएंगी, अर्थात् :—

- (क) लाभ या हानियां रा० फि० वि० नि० लि० के क्रमशः लाभ या हानियों को अन्तरित की जाएंगी ;
- (ख) विकासार्थ रिबेट आरक्षित रा० फि० वि० नि० लि० की विकासार्थ रिबेट आरक्षितों को अन्तरित की जाएगी ;
- (ग) राजस्व और पूंजी आरक्षितियां रा० फि० वि० नि० लि० की राजस्व और पूंजी आरक्षितियों को अन्तरित की जाएंगी ।

5. संविदाओं आदि की व्याप्ति—इस आदेश के अन्य उपबन्धों के अधीन रहते हुए, नियत दिन के ठीक पूर्व विद्यमान या प्रभावी सभी संविदाएं, विलेख, बन्धपत्र, करार और सभी प्रकार की अन्य लिखित शिर्षकी फि० वि० नि० लि० और रा० फि० वि० नि० लि० पक्षकार हैं, उस तारीख से रा० फि० वि० नि० लि० के, यथास्थिति, विरुद्ध या पक्ष में पूर्णतः प्रवृत्त और प्रभावी होंगी तथा पूर्णतया और प्रभावी तौर पर इस प्रकार प्रवृत्त की जा सकेंगी, मानो, यथास्थिति फि० वि० नि० लि० और भा० च० वि० नि० लि० के स्थान पर रा० फि० वि० नि० लि० पक्षकार हो या भागो वे रा० फि० वि० नि० लि० के पक्ष में विवादित की गई हों ।

6. विधिक कार्यवाही की व्याप्ति—यदि नियत दिन को फि० वि० नि० लि० और भा० च० वि० नि० लि० द्वारा या उनके विरुद्ध कोई वाद, माध्यस्थता, अपील या किसी प्रकार की अन्य राजस्व या विधिक कार्यवाही लम्बित है तो, यथास्थिति, फि० वि० नि० लि० और भा० च० वि० नि० लि० के उपक्रमों के रा० फि० वि० नि० लि० को अन्तरण या इस आदेश में किसी बात के कारण उसका उपशमन नहीं होगा, उन्हें रोका नहीं जाएगा या उनपर किसी भी प्रकार प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा किन्तु वह वाद, माध्यस्थता, अपील या अन्य कार्यवाही रा० फि० वि० नि० लि० द्वारा या उसके विरुद्ध, उसी रीति से और उसी विस्तार तक चालू रखी जा सकेगी, अभियोजित की जा सकेगी और प्रवर्तित की जा सकेगी जिस रीति से और जहां तक कि वह यदि यह आदेश नहीं किया गया होता तो फि० वि० नि० लि० और भा० च० वि० नि० लि० द्वारा या उनके विरुद्ध चालू रखी, अभियोजित और प्रवर्तित की जाती या की जा सकती ।

7. रा० फि० वि० नि० लि० की पूंजी की संरचना—(1) नियत दिन से रा० फि० वि० नि० लि० की प्राधिकृत शेयर पूंजी 3,00,00,000 रुपए (तीन करोड़ रुपए) से 4,00,00,000 रुपए (चार करोड़ रुपए) तक बढ़ाई जाएगी और 100 रुपए प्रति साधारण शेयर के 4,00,000 साधारण शेयरों में विभाजित रहेगी ।

(2) नियत दिन से रा० फि० वि० नि० लि० की समावृत्त पूंजी 1,35,47,500 रुपए (एक करोड़ पैंतीस लाख सैंतालीस हजार रुपए) होगी । रा० फि० वि० नि० लि० 100 रुपए प्रति शेयर के हिसाब से 1,25,000 रुपए के पूर्णतः समावृत्त साधारण शेयर निर्गमित करेगी जो भारत के राष्ट्रपति को आवंटित किए जाएंगे ।

8. साधारण शेयरधारकों के अधिकार—(1) नियत दिन के पश्चात् यथाशीघ्र रा० फि० वि० नि० लि० का निदेशक बोर्ड नए शेयर प्रमाणपत्र तैयार करेगा जो रा० फि० वि० नि० लि० के 100 रुपए प्रति साधारण शेयर के हिसाब से 1,25,000 साधारण शेयरों के लिए होंगे ।

(2) रा० फि० वि० नि० लि० केन्द्रीय सरकार को, जिसका प्रतिनिधित्व भारत सरकार के सूचना और प्रसारण मंत्रालय के सचिव द्वारा किया गया है रसीदी रजिस्ट्री डाक द्वारा एक सूचना भेजेगा जिसमें उन शेयर प्रमाणपत्रों की विशिष्टियां दी जाएंगी जो खंड 7 के उपखंड (2) के अधीन उनकी हकदारी के निबन्धनों के अनुसार उनमें से प्रत्येक को निर्गमित किए जाने हैं । कंपनी साथ ही साथ उक्त सूचना और कागजपत्रों के शेयरधारकों को प्रेषण के तथ्य को सभी महत्वपूर्ण समाचारपत्रों में प्रकाशित करेगी ।

9. कराधान के बारे में उपबन्ध—(1) यथास्थिति, फि० वि० नि० लि० और भा० च० वि० नि० लि० द्वारा किए गए कारबार के लाभों और अश्लेषों के बारे में सभी कर रा० फि० वि० नि० लि० द्वारा उस विस्तार तक संदेय होंगे जहां तक कि वे, यदि यह आदेश न किया गया होता तो, यथास्थिति, फि० वि० नि० लि० और भा० च० वि० नि० लि० द्वारा संदेय होते ।

10. विद्यमान अधिकारियों और अन्य कर्मचारियों के बारे में उपबन्ध—फि० वि० नि० लि० और भा० च० वि० नि० लि० में नियत दिन से ठीक पूर्व नियोजित प्रत्येक पूर्णकालिक अधिकारी या अन्य कर्मचारी (जिसके अन्तर्गत निदेशक नहीं हैं) (नियत दिन से रा० फि० वि० नि० लि० का, यथास्थिति अधिकारी या अन्य कर्मचारी हो जाएगा और उसी अवधि तक और उन्हीं निबन्धनों और शर्तों तथा पेंशन, भविष्यनिधि या उपदान के बारे में उन्हीं अधिकारों और विशेषाधिकारों सहित उनमें अपना पद धारण करेगा और सेवा करेगा जो कि उसे यदि यह आदेश न किया गया होता तो, यथास्थिति, फि० वि० नि० लि० और भा० च० वि० नि० लि० के अधीन अनुज्ञेय होते और उनका ऐसा होना तब तक जारी रहेगा जब तक कि रा० फि० वि० नि० लि० में उसका नियोजन सम्यक् रूप से समाप्त नहीं कर दिया जाता है या जब तक कि उसके पारिश्रमिक या सेवा की शर्तें रा० फि० वि० नि० लि० द्वारा वारिस्थितिक सहमति से सम्यक् रूप से परिवर्तित नहीं की जाती हैं ।

(2) नियत दिन के ठीक पूर्व यथास्थिति, फिंविंनिंलिं और भांञ्चंविंनिंलिं के संपरीक्षकों के रूप में पद धारण करने वाले व्यक्ति इस प्रकार समामेलित यथास्थिति, फिंविंनिंलिं और भांञ्चंविंनिंलिं के उपक्रमों की बाबत रांफिंविंनिंलिं के संपरीक्षक हो जाएंगे और आगामी वार्षिक साधारण अधिवेशन की समाप्ति तक पद धारण करेंगे।

11. भविष्यनिधि, अधिवापिकी, कल्याणनिधि और अन्य निधियां—
(1) यदि, यथास्थिति, फिंविंनिंलिं और भांञ्चंविंनिंलिं ने अपने अधिकारियों और अन्य कर्मचारियों के फायदे के लिए कोई भविष्य निधि, अधिवापिकी-निधि, कल्याणनिधि या कोई अन्य निधि स्थापित की थी और उसके बारे में कोई न्यास (जिसे इसमें इसके पश्चात् इस खंड में विद्यमान न्यास कहा गया है) गठित किया या तथा नियत दिन को ऐसी निधि में जमा रकमें ऐसी निधियों से सम्बन्धित अन्य भास्तिर्यों सहित, ऐसे किसी न्यास से मुक्त नियत दिन को रांफिंविंनिंलिं को अन्तरित हो जाएंगी और उसमें निहित रहेंगी।

(2) रांफिंविंनिंलिं नियत दिन के पश्चात् यथाशीघ्र उन रकमों और भास्तिर्यों के बारे में जो उपखंड (1) के अधीन उसे अन्तरित की गई हैं और उसमें निहित हैं, वेसे ही उद्देश्य, निर्बन्धन और शर्तें रखने वाले, जोकि विद्यमान न्यासों के उद्देश्यों, निर्बन्धनों और शर्तों के समरूप हों, ऐसे एक या अधिक न्यास गठित करेगा जो कि परिस्थितियों में साध्य हों। किन्तु विद्यमान न्यास के हितधिकारियों के अधिकारों और हितों में किसी भी प्रकार से कमी नहीं की जाएगी या उन पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं डाला जाएगा।

(3) जहां किसी विद्यमान न्यास से सम्बन्धित सभी रकमें और अन्य भास्तिर्यों इस खंड के अधीन रांफिंविंनिंलिं को अन्तरित की जाती हैं और उसमें निहित हो जाती हैं वहां ऐसे न्यास के न्यासी नियत दिन के पूर्व की गई या न की गई बातों के सिवाए, नियत दिन से न्याय से उन्मोचित हो जाएंगे।

12. निदेशों की स्थिति—यथास्थिति, फिंविंनिंलिं और भांञ्चंविंनिंलिं का प्रत्येक निदेशक जो नियत दिन के ठीक पूर्व ऐसा पद धारण करता रहा या नियत दिन को, यथास्थिति, फिंविंनिंलिं और भांञ्चंविंनिंलिं का निदेशक नहीं रहेगा।

13. फिंविंनिंलिं और भांञ्चंविंनिंलिं का विघटन—इस आदेश के अन्य उपबन्धों के अधीन रहते हुए नियत दिन से फिंविंनिंलिं और भांञ्चंविंनिंलिं विघटित हो जाएंगी और कोई भी व्यक्ति, यथा स्थिति, फिंविंनिंलिं और भांञ्चंविंनिंलिं के विरुद्ध या ऐसे निदेशक या अधिकारी के विरुद्ध उसके किसी निदेशक या अधिकारी की हसीयत से वहां के सिवाए जहां तक कि इस आदेश के उपबन्धों को प्रवर्तित करने के लिए आवश्यक हो कोई वादा नहीं करेगा या कोई मांग नहीं करेगा या कोई कार्यवाही नहीं करेगा।

14. कंपनी रजिस्ट्रार द्वारा आदेश का रजिस्ट्रीकरण—कंपनी विधि बोर्ड, इस आदेश के जारी होने के पश्चात् यथाशीघ्र, कंपनी रजिस्ट्रार, महाराष्ट्र को इस आदेश की एक प्रति और रांफिंविंनिंलिं के इस आदेश द्वारा यथा परिवर्तित शापन और संगम अनुच्छेदों की मुद्रित प्रति भेजेगा जिसकी प्राप्ति पर कंपनी रजिस्ट्रार, महाराष्ट्र रांफिंविंनिंलिं द्वारा विहित फीस, जिसमें वह विहित फीस भी सम्मिलित है, जो उसकी प्राधिकृत शेयर पूंजी में वृद्धि करने के लिए इसमें यथा उपबन्धित है, के संशय किए जाने पर, आदेश को रजिस्ट्रीकृत करेगा और आदेश की प्रति की प्राप्ति की तारीख से एक मास के भीतर उसके रजिस्ट्रीकरण को अपने हस्ताक्षर से प्रमाणित करेगा; और रांफिंविंनिंलिं के शापन और संगम अनुच्छेदों को एक प रवर्तन करेगा।

15. रांफिंविंनिंलिं के शापन और संगम अनुच्छेद—रांफिंविंनिंलिं के शापन और संगम अनुच्छेद जैसे वे नियत दिन से ठीक पूर्व थे इससे उपाबद्ध अनुमूची में विनिर्दिष्ट संशोधनों के अधीन रहते हुए, उसी दिन से रांफिंविंनिंलिं के शापन और संगम अनुच्छेद हो जाएंगे

अनुसूची

(खंड 15 देखिए)

रांफिंविंनिंलिं के शापन और संगम अनुच्छेदों का संशोधन
भाग 1—संगम शापन का संशोधन—खंड V के स्थान पर निम्नलिखित खंड रखा जाएगा, अर्थात्:—

“V पूंजी—कंपनी की प्राधिकृत शेयर पूंजी 4,00,00,000 रु० (चार करोड़ रुपए) है जो 100 रुपए के 4,00,000 साधारण शेयरों में विभाजित होगी।”

भाग 2—संगम अनुच्छेदों का संशोधन—अनुच्छेद 4 के स्थान पर निम्नलिखित अनुच्छेद रखा जाएगा, अर्थात्:

“अनुच्छेद 4—कंपनी की प्राधिकृत शेयर पूंजी 4,00,00,000 रु० (चार करोड़ रुपए) है जो 100 रुपए के 4,00,000 साधारण शेयरों में विभाजित होगी।”

परन्तु बोर्ड, राष्ट्रपति के पूर्वानुमोदन से और ऐसे निदेशों के अधीन रहते हुए जो राष्ट्रपति इस निमित्त से और साधारण अधिवेशन में कंपनी द्वारा दी गई मंजूरी के अधीन रहते हुए शेयर पूंजी को ऐसी रकम तक बढ़ा सकेगा जो ऐसी रकम के शेयरों में विभाजित होगी जो संकल्प में विहित की जाए”।

[सं० 24/22/79-सीसी-III]

कंपनी विधि बोर्ड के आदेश द्वारा

ए० नीलकण्ठन, सचिव कंपनी विधि बोर्ड

MINISTRY OF LAW, JUSTICE AND COMPANY AFFAIRS

(Company Law Board)

ORDER

New Delhi, the 11th April, 1980

S.O. 247(E).—Whereas the Film Finance Corporation Limited is a company incorporated under the Companies Act, 1956 (1 of 1956) and has its registered office at 13-16, Regent Chambers, 208, Nariman Point, Bombay-400021, and carries on the business of financing of production of films and import and distribution of foreign feature films and cinema films;

And whereas the Indian Motion Pictures Export Corporation Limited is also a company incorporated under the Companies Act, 1956 (1 of 1956) and has its registered office at 'D' Block, Shiv Sagar Estate, Dr. Annie Besant Road, Worli, Bombay-400018, and carries on the business of export of films;

And whereas the National Film Development Corporation Limited is also a company incorporated under the Companies Act, 1956 (1 of 1956) and has its registered office in the State of Maharashtra and is at present not actually engaged in any business activity;

And whereas all the shares of the three companies referred to above are held by the Central Government in the name of the President of India;

And whereas the Company Law Board is satisfied that it is essential in the public interest that the Film Finance Corporation Limited and the Indian Motion Pictures Export Corporation Limited should be amalgamated with the National Film Development Corporation Limited so that the activities of all the companies may be carried on more efficiently and economically by a single company;

And whereas a copy of the proposed order has been sent in draft to the aforesaid three companies, namely, the Film Finance Corporation Limited, the Indian Motion Pictures Export Corporation Limited and the National Film Development Corporation Limited, and the suggestions received from them have been duly considered by the Company Law Board and no objections have been received from anyone ;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by sub-sections (1) and (2) of section 396 of the Companies Act, 1956 (1 of 1956), read with the notification of the Government of India in the Department of Company Affairs No. G.S.R. 445(E), dated the 18th October, 1972, the Company Law Board hereby makes the following Order, namely :—

1. Short title.—This order may be called the Film Finance Corporation Limited, the Indian Motion Pictures Export Corporation Limited and the National Film Development Corporation Limited Amalgamation Order, 1979.

2. Definitions.—In this Order, unless the context otherwise requires—

- (a) 'appointed day' means the date on which this Order is notified in the Official Gazette ;
- (b) FFCL means the Films Finance Corporation Limited ;
- (c) IMPECL means the Indian Motion Pictures Export Corporation Limited ;
- (d) NFDCL means the National Film Development Corporation Limited ;

3. Amalgamation of the Companies.—On the appointed day, the undertakings of FFCL, IMPECL shall stand transferred to, and vested in NFDCL, which Company shall, immediately on such transfer, be deemed to be the company resulting from the amalgamation.

Explanation.—The undertakings of FFCL and IMPECL referred to above shall be deemed to include all assets, rights, leases, tenancies, powers, authorities and privileges, trade marks, trade names, patent rights and licences for the use of patents and all property, movable and immovable, tangible or intangible (including cash and bank balances), reserve funds, book debts, outstandings, reserves, balances on revenue accounts, investments and all other rights and interests in, or arising out of, such property and rights as were, immediately before the appointed day, in the ownership, possession, power or control of FFCL and IMPECL in relation to their respective undertakings and all books, accounts, registers, records and all other documents of whatever nature relating thereto, and shall also be deemed to include all borrowings, debts and other liabilities (including the liability for the payment of any pension and other pensionary benefits to the persons employed in relation to their respective undertakings and obligation of whatever kind then subsisting of FFCL and IMPECL in relation to their respective undertaking.

4. Transfer of certain items of property.—For the purposes of this Order, all the profits and losses and reserves of FFCL and IMPECL, as on the day immediately preceding the appointed day, shall be transferred to NFDCL as follows, namely :—

- (a) Profits or losses shall be transferred to the profits or losses respectively of NFDCL ;
- (b) Development rebate reserve shall be transferred to the Development Rebate Reserve of NFDCL ;
- (c) Revenue and Capital Reserves shall be transferred to the Revenue and Capital Reserves of NFDCL.

5. Saving of contracts, etc.—Subject to other provisions contained in this order, all contracts, deeds, bonds, agreements and other instruments of whatever nature to which FFCL and IMPECL is a party, subsisting or having effect immediately before the appointed day, shall, as from that day, be of as full force and effect against, or in favour of, NFDCL, as the case may be, and may be enforced as fully and effectually as if, instead of FFCL and IMPECL, as the case may be, NFDCL has been a party thereto or as if they had been executed in favour of NFDCL.

6. Saving of legal proceedings.—If, on the appointed day, there is pending any suit, arbitration, appeal or other revenues or legal proceedings of whatever nature by or against FFCL and IMPECL, the same shall not abate, be discontinued or be in any way prejudicially affected by reason of the transfer to NFDCL of the undertakings of FFCL and IMPECL, as the case may be, or of anything contained in this Order, but the suit, arbitration, appeal or other proceedings may be continued, prosecuted and enforced by or against NFDCL in the same manner and to the same extent as it would or might have been continued, prosecuted and enforced by or against FFCL and IMPECL, if this Order had not been made.

7. Capital structure of NFDCL.—(1) As from the appointed day the authorised share capital of NFDCL shall stand increased from Rs. 3,00,00,000 (rupees three crores) to Rs. 4,00,00,000 (rupees four crores) divided into 4,00,000 equity shares of Rs. 100 each.

(2) As from the appointed day, the paid-up capital of NFDCL shall be Rs. 1,35,47,500 (rupees one crore thirty five lakhs forty seven thousand and five hundred). NFDCL shall issue 1,25,000 fully paid-up equity shares of Rs. 100 each which shall be allotted to the President of India.

8. Rights of Equity Shareholders.—(1) As soon as may be, after the appointed day, the Board of Directors of NFDCL shall prepare new share certificates representing 1,25,000 equity shares of NFDCL of Rs. 100 each.

(2) NFDCL shall send by registered post acknowledgement due to the Central Government represented by the Secretary to the Government of India in the Ministry of Information and Broadcasting, notice giving particulars of the share certificates to be issued in terms of their entitlement under sub-clause (2) of clause 7. The company shall also simultaneously publish in all important newspapers about the fact of despatch of the said notice and papers to the shareholders.

9. Provision with respect to taxation.—All taxes in respect of the profits and gains of the business carried on by FFCL and IMPECL as the case may be, before the appointed day shall be payable by NFDCL to the same extent as they would have been payable by FFCL and IMPECL, as the case may be, if this Order had not been made.

10. Provisions respecting existing officers and other employees.—(1) Every wholetime officer or other employees (not including directors) employed immediately before the appointed day in FFCL and IMPECL shall, as from the appointed day, become an officer or other employee, as the case may be, of NFDCL and shall hold his office or service therein by the same tenure and upon the same terms and conditions and with the same rights and privileges as to pension, provident fund or gratuity as would have been admissible to him under FFCL and IMPECL, as the case may be, if this Order had not been made, and shall continue to do so unless and until his employment in NFDCL is duly terminated and until his remuneration and conditions of service are duly altered by NFDCL by mutual consent.

(2) The persons holding office immediately before the appointed day as the auditors of FFCL and IMPECL, as the case may be, shall be the auditors of NFDCL in respect of the undertaking of FFCL and IMPECL so amalgamated and shall hold office until the conclusion of the next annual general meeting after the appointed day of NFDCL.

11. Provident, superannuation, welfare and other Funds.—(1) Where FFCL and IMPECL, as the case may be, had established a provident, superannuation, welfare or any other fund for the benefit of its officers and other employees and constituted a trust in respect thereof (hereinafter in this clause referred to as an existing trust), the moneys standing to the credit of such funds on the appointed day, together with other assets belonging to such funds, shall stand transferred to, and vested in, NFDCL on the appointed day free from any such trust.

(2) NFDCL shall, as soon as may be, after the appointed day, constitute in respect of moneys and other assets which are transferred to, and vested in it, under sub-clause

(1), one or more trusts having objects, terms and conditions similar to those of the existing trust as in the circumstances may be practicable, so however, that the rights and interest of the beneficiaries of the existing trust shall not in any way be diminished or prejudiced.

(3) Where all the moneys and other assets belonging to an existing trust are transferred to, and vested in NFDCL under this clause, the trustees of such trust shall, as from the appointed day, stand discharged from the trust, except as respects things done or omitted to be done before the appointed day.

12. Position of Directors.—Every Director of FFCL and IMPECL, as the case may be, holding office as such immediate before the appointed day shall cease to be a director of FFCL and IMPECL, as the case may be, on the appointed day.

13. Dissolution of FFCL and IMPECL.—Subject to other provisions of this Order, as from the appointed day, FFCL and IMPECL shall be dissolved, and no person shall make, assert or take any claims, demands or proceedings against FFCL and IMPECL, as the case may be, or against any director or officer thereof, in his capacity as such director or officer, except insofar as may be necessary for enforcing the provisions of this Order.

14. Registration of the Order by the Registrar of Companies.—The Company Law Board shall, as soon as may be, after the issue of this Order, send to the Registrar of Companies, Maharashtra, a copy of this Order together with the printed copy of the Memorandum and Articles of Association of NFDCL, as amended by this Order, on receipt of which the Registrar of Companies, Maharashtra shall register the Order on payment of the prescribed fee by NFDCL inclusive of the prescribed fees for increase in its authorised share capital as provided herein and shall certify under his hand the registration thereof, within one month from the receipt of the copy of the Order by him; and shall make necessary alterations in the Memorandum and Articles of Association of NFDCL.

15. Memorandum and Articles of Association of NFDCL.—The Memorandum and Articles of Association of NFDCL, as they stood immediately before the appointed day, shall as from that day, be the Memorandum and Articles of Association of NFDCL, subject to the amendments specified in the Schedule attached hereto.

SCHEDULE

(See clause 15)

Amendments to the Memorandum and Articles of Association of NFDCL

Part I.—Amendment of the Memorandum of Association.—For clause V; the following clause shall be substituted, namely :

“V. Capital.—The authorised share capital of the company is Rupees 4,00,00,000 (rupees four crores) divided into 4,00,000 equity shares of Rs. 100 each.

Part II.—Amendment of the Articles of Association.—For Article 4, the following Article shall be substituted, namely

“Article 4.—The authorised share capital of the company is Rs. 4,00,00,000 (rupees four crores) divided in 4,00,000 equity shares of Rs 100 each :

Provided that the Board may, with the prior approval of the President and subject to such directions as the President may give in this behalf and the sanction of the company in general meeting, increase the share capital by such sum to be divided into a shares of such amount as the resolution shall prescribe”

[No. 24/22/79-CC.III]

By Order of the Company Law Board.

A. NEELAKANTAN, Member.

Company Law Board

